International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 14 Issue 3 || March 2025 || PP. 161-174

उत्तर प्रदेश के गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर, महराजगंज एवं सिद्धार्थनगर जनपदों के कक्षा 9 के कला वर्ग के सामान्य वर्ग तथा अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के किशोर विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं के प्रति उत्पन्न कुण्ठा का तुलनात्मक अध्ययन

कुंवर रिपुदमन सिंह एवं प्रो०अर्चना मिश्रा
शोधार्थी, एम०ए, एम०एड् नेट, रतन सेन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बांसी, सिद्धार्थ नगर
प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, रतन सेन स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बांसी, सिद्धार्थ नगर

सार

प्रस्तुत शोध का उद्देश्य उत्तर प्रदेश के गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर, महराजगंज एवं सिद्धार्थनगर जनपदों के कक्षा 9 के कला वर्ग के सामान्य वर्ग तथा अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के किशोर विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं के प्रति उत्पन्न कुण्ठा का तुलनात्मक अध्ययन करना है। अध्ययन में कुल 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 100 सामान्य वर्ग तथा 100 अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थी सम्मिलित थे। अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। आँकड़ों के संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा निर्मित एवं मान्यीकृत प्रश्नावली का उपयोग किया गया। संकलित आँकड़ों का विश्लेषण प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन, स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण, सहसंबंध तथा बहु-प्रतिगमन विश्लेषण जैसी सांख्यिकीय तकनीकों द्वारा किया गया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों में समायोजन समस्याओं एवं उनसे उत्पन्न कुण्ठा का स्तर सामान्य वर्ग की अपेक्षा अधिक पाया गया। भावनात्मक समायोजन, अध्ययन सम्बन्धी कठिनाइयाँ, आर्थिक परिस्थितियाँ, आत्मविश्वास तथा भविष्य सम्बन्धी चिंता विद्यार्थियों की कुण्ठा को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक सिद्ध हुए। अध्ययन यह संकेत करता है कि विद्यालयों में समावेशी वातावरण, मनोवैज्ञानिक परामर्श, जीवन-कौशल शिक्षा तथा अभिभावक-विद्यालय समन्वय को सुदृढ़ बनाकर विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में वृद्धि की जा सकती है तथा उनकी कुण्ठा को कम किया जा सकता है। यह अध्ययन शिक्षकों, मनोवैज्ञानिकों, शिक्षा प्रशासकों एवं नीति-निर्माताओं के लिए उपयोगी संदर्भ सामग्री प्रदान करता है।

मुख्य शब्दः *समायोजन, कुण्ठा, किशोर विद्यार्थी, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, सामान्य वर्ग*

भूमिका

भारतीय समाज विविध जातीय, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक समूहों से निर्मित है। प्रत्येक विद्यार्थी अपने पारिवारिक, सामाजिक तथा विद्यालयी परिवेश से प्रभावित होता है। किशोरावस्था मानव जीवन का अत्यंत संवेदनशील एवं संक्रमणकालीन चरण है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक तथा सामाजिक स्तर पर तीव्र परिवर्तन होते हैं। इस अवस्था में विद्यार्थियों को शिक्षा, परिवार, मित्र समूह, प्रतियोगिता, भविष्य की चिंता तथा सामाजिक अपेक्षाओं के कारण अनेक प्रकार की समायोजन समस्याओं का सामना करना पड़ता है। समायोजन (Adjustment) वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति स्वयं तथा अपने परिवेश के बीच संतुलन स्थापित करता है। जब विद्यार्थी अपने विद्यालय, परिवार, सहपाठियों अथवा सामाजिक परिस्थितियों के साथ संतुलन स्थापित नहीं कर पाता, तब उसमें तनाव, निराशा, असंतोष तथा कुण्ठा (Frustration) उत्पन्न होने लगती है। यह कुण्ठा उसके व्यक्तित्व विकास, शैक्षिक उपलब्धि, आत्मविश्वास तथा सामाजिक व्यवहार पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थी अनेक बार सामाजिक, आर्थिक एवं

शैक्षिक विषमताओं का सामना करते हैं, जबकि सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की परिस्थितियाँ अपेक्षाकृत भिन्न हो सकती हैं। इन विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमियों के कारण समायोजन की समस्याओं एवं उनसे उत्पन्न कुण्ठा के स्तर में अंतर पाया जा सकता है। इस अंतर का वैज्ञानिक अध्ययन शिक्षा व्यवस्था, परामर्श सेवाओं तथा समावेशी शिक्षा को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक होगा। प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेश के **गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर, महराजगंज तथा सिद्धार्थनगर** जनपदों के कक्षा 9 के कला वर्ग के **200 विद्यार्थियों** (100 सामान्य वर्ग एवं 100 अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग) पर आधारित होगा। यह अध्ययन विभिन्न सामाजिक वर्गों के किशोर विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं तथा उनसे उत्पन्न कुण्ठा का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करेगा।

शोध समस्या

क्या गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर, महराजगंज एवं सिद्धार्थनगर जनपदों के कक्षा 9 के कला वर्ग के अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के किशोर विद्यार्थियों तथा सामान्य वर्ग के किशोर विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं के प्रति उत्पन्न कुण्ठा के स्तर में कोई महत्वपूर्ण अंतर पाया जाता है?

. शोध प्रश्न

1. क्या अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के किशोर विद्यार्थियों में समायोजन समस्याओं से उत्पन्न कुण्ठा का स्तर सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों से भिन्न है?
2. क्या पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता को प्रभावित करता है?
3. क्या विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की कुण्ठा को प्रभावित करता है?
4. क्या सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ समायोजन समस्याओं को बढ़ाती हैं?
5. क्या विभिन्न जनपदों के विद्यार्थियों में समायोजन एवं कुण्ठा के स्तर में अंतर पाया जाता है?

अध्ययन की आवश्यकता

1. किशोर विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं की पहचान करना।
2. विभिन्न सामाजिक वर्गों के विद्यार्थियों की मानसिक एवं भावनात्मक स्थिति को समझना।
3. विद्यालयों में प्रभावी परामर्श सेवाओं के विकास हेतु आधार प्रदान करना।
4. समावेशी एवं समान अवसर आधारित शिक्षा नीति को सुदृढ़ करना।
5. विद्यार्थियों की कुण्ठा के कारणों की पहचान कर उनके समाधान के उपाय सुझाना।
6. शिक्षा प्रशासन एवं नीति-निर्माताओं को उपयोगी सुझाव प्रदान करना।
7. सामाजिक समानता एवं शैक्षिक न्याय को बढ़ावा देना।

अध्ययन का महत्व

यह अध्ययन शैक्षिक, मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण होगा। इसके निष्कर्षों के आधार पर विद्यालयों में विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं को कम करने हेतु प्रभावी परामर्श कार्यक्रम विकसित किए जा सकेंगे। यह अध्ययन शिक्षकों, अभिभावकों, शिक्षा प्रशासकों तथा नीति-निर्माताओं को यह समझने में सहायता करेगा कि विभिन्न सामाजिक वर्गों के विद्यार्थियों की आवश्यकताओं में क्या अंतर है तथा उनके अनुरूप शैक्षिक वातावरण कैसे विकसित किया जाए। अध्ययन से सामाजिक समावेशन, समान अवसर तथा विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रोत्साहन मिलेगा।

अध्ययन के उद्देश्य

1. अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के किशोर विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं से उत्पन्न कुण्ठा का अध्ययन करना।
2. सामान्य वर्ग के किशोर विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं से उत्पन्न कुण्ठा का अध्ययन करना।

3. दोनों वर्गों के विद्यार्थियों की कुण्ठा के स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. पारिवारिक, विद्यालयी एवं सामाजिक कारकों का समायोजन पर प्रभाव ज्ञात करना।
5. समायोजन समस्याओं एवं कुण्ठा के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
6. विद्यार्थियों के समुचित समायोजन हेतु उपयोगी सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध परिकल्पनाएँ (Hypotheses)

शून्य परिकल्पनाएँ (Null Hypotheses)

H_{01}: अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग तथा सामान्य वर्ग के किशोर विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं से उत्पन्न कुण्ठा के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

H_{02}: पारिवारिक वातावरण एवं विद्यार्थियों की कुण्ठा के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं होगा।

H_{03}: विद्यालयी वातावरण एवं विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं होगा।

H_{04}: सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं को सार्थक रूप से प्रभावित नहीं करेगी।

H_{05}: अध्ययन क्षेत्र के विभिन्न जनपदों के विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं से उत्पन्न कुण्ठा के स्तर में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

अध्ययन की परिसीमाएँ (Delimitations of the Study)

1. अध्ययन केवल **उत्तर प्रदेश के गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर, महराजगंज एवं सिद्धार्थनगर** जनपदों तक सीमित रहेगा।
2. अध्ययन केवल **कक्षा 9 के कला वर्ग** के विद्यार्थियों तक सीमित होगा।
3. अध्ययन में कुल **200 विद्यार्थी** सम्मिलित किए जाएंगे।
4. इनमें **100 सामान्य वर्ग** तथा **100 अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग** के विद्यार्थी शामिल होंगे।
5. अध्ययन केवल किशोर विद्यार्थियों की **समायोजन समस्याओं एवं उनसे उत्पन्न कुण्ठा** तक सीमित रहेगा।
6. अध्ययन में प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकीय विधियों के माध्यम से किया जाएगा।
7. अध्ययन केवल चयनित विद्यालयों एवं चयनित विद्यार्थियों पर आधारित होगा, अतः निष्कर्षों का सामान्यीकरण इन्हीं परिसीमाओं के अंतर्गत किया जाएगा।

साहित्य समीक्षा -

समायोजन तथा कुण्ठा शिक्षा मनोविज्ञान के अत्यंत महत्वपूर्ण विषय हैं। किशोरावस्था में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, व्यवहार, शैक्षिक उपलब्धि तथा मानसिक स्वास्थ्य पर समायोजन की गुणवत्ता का प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। पूर्ववर्ती अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि पारिवारिक वातावरण, सामाजिक परिस्थितियाँ, विद्यालयी परिवेश, आर्थिक स्थिति तथा साथियों का प्रभाव विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। उपलब्ध साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि जिन विद्यार्थियों को परिवार एवं विद्यालय से सकारात्मक सहयोग प्राप्त होता है, उनमें आत्मविश्वास अधिक तथा कुण्ठा का स्तर अपेक्षाकृत कम होता है। इसके विपरीत आर्थिक कठिनाइयाँ, सामाजिक भेदभाव, शैक्षिक प्रतिस्पर्धा तथा पारिवारिक तनाव विद्यार्थियों के समायोजन को प्रभावित करते हैं। अनेक अध्ययनों में यह भी पाया गया कि सामाजिक रूप से वंचित वर्गों के विद्यार्थियों को विद्यालयी एवं सामाजिक समायोजन में अपेक्षाकृत अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। पूर्व शोधों में समायोजन के पारिवारिक, विद्यालयी, सामाजिक एवं भावनात्मक आयामों का अध्ययन किया गया है। अधिकांश शोधों ने यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया है कि समायोजन समस्याओं एवं मानसिक तनाव के मध्य धनात्मक संबंध पाया जाता है। जिन विद्यार्थियों में समायोजन का स्तर निम्न होता है, उनमें चिंता, असुरक्षा, निराशा तथा कुण्ठा की प्रवृत्ति अधिक विकसित होती है। कुछ अध्ययनों ने यह भी संकेत दिया है कि विद्यालयी वातावरण, शिक्षक का व्यवहार तथा सहपाठियों का सहयोग

विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययनों से ज्ञात होता है कि सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं के कारण इन वर्गों के विद्यार्थियों को अनेक प्रकार की शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सीमित संसाधन, अभिभावकों की निम्न शैक्षिक पृष्ठभूमि, आर्थिक दबाव तथा भविष्य की अनिश्चितता उनके समायोजन स्तर को प्रभावित करती है। दूसरी ओर सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों में भी परीक्षा तनाव, प्रतियोगिता, कैरियर संबंधी चिंता तथा सामाजिक अपेक्षाएँ समायोजन संबंधी समस्याओं का कारण बनती हैं। साहित्य के अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि अधिकांश पूर्व शोध किसी एक जनपद, किसी एक सामाजिक वर्ग अथवा केवल समायोजन या केवल कुण्ठा तक सीमित रहे हैं। गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर, महराजगंज एवं सिद्धार्थनगर जनपदों के कक्षा 9 के कला वर्ग के सामान्य वर्ग तथा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं के प्रति उत्पन्न कुण्ठा का तुलनात्मक अध्ययन अपेक्षाकृत कम उपलब्ध है। इसी शोध-अंतर (Research Gap) की पूर्ति हेतु प्रस्तुत अध्ययन किया गया है।

शोध पद्धति -

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक (Descriptive) एवं तुलनात्मक (Comparative) शोध प्रारूप पर आधारित है। अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न सामाजिक वर्गों के किशोर विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं के प्रति उत्पन्न कुण्ठा का तुलनात्मक विश्लेषण करना है।

1. शोध प्रारूप-अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

2. अध्ययन का क्षेत्र-अध्ययन उत्तर प्रदेश के गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर, महराजगंज एवं सिद्धार्थनगर जनपदों के चयनित माध्यमिक विद्यालयों तक सीमित रहा।

3. जनसंख्या (Population)-अध्ययन की जनसंख्या इन पाँचों जनपदों के कक्षा 9 के कला वर्ग के किशोर विद्यार्थी थे।

4. निदर्शन (Sample)-अध्ययन हेतु कुल **200 विद्यार्थियों** का चयन किया गया। इनमें—-सामान्य वर्ग – 100 विद्यार्थी अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग – 100 विद्यार्थी, निदर्शन का चयन उद्देश्यपूर्ण (Purposive Sampling) एवं स्तरीकृत (Stratified Sampling) पद्धति द्वारा किया गया।

5. अध्ययन के चर (Variables)-

स्वतंत्र चर- सामाजिक वर्ग (सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति/अन्य पिछड़ा वर्ग)

आश्रित चर-समायोजन समस्याओं के प्रति उत्पन्न कुण्ठा

6. आँकड़ों के स्रोत

- **प्राथमिक स्रोत:** विद्यार्थियों से प्राप्त प्रश्नावली आधारित आँकड़े।
- **द्वितीयक स्रोत:** पुस्तकें, शोध पत्र, शोध प्रबंध, पत्रिकाएँ, सरकारी प्रतिवेदन एवं शैक्षिक दस्तावेज।

7. शोध उपकरण-अध्ययन के लिए शोधकर्ता द्वारा समायोजन एवं कुण्ठा से संबंधित संरचित प्रश्नावली तैयार की गई। प्रश्नावली का विशेषज्ञों द्वारा परीक्षण कर आवश्यक संशोधन किए गए। उपकरण की विश्वसनीयता का परीक्षण क्रोनबाख अल्फा (Cronbach's Alpha) द्वारा तथा वैधता का परीक्षण विषय विशेषज्ञों के मत के आधार पर किया गया।

8. आँकड़ों के संकलन की प्रक्रिया-शोधकर्ता ने चयनित विद्यालयों से पूर्व अनुमति प्राप्त कर विद्यार्थियों से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित किया। अध्ययन के उद्देश्य स्पष्ट करने के पश्चात प्रश्नावली वितरित की गई तथा उत्तर प्राप्त होने पर उनका संपादन, वर्गीकरण एवं सारणीकरण किया गया।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या का परिचय

प्रस्तुत अध्याय में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के किशोर विद्यार्थियों तथा सामान्य वर्ग के किशोर विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं के प्रति उत्पन्न कुण्ठा के तुलनात्मक अध्ययन से प्राप्त आँकड़ों का विस्तृत सांख्यिकीय विश्लेषण एवं व्याख्या प्रस्तुत की गई है। अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न सामाजिक वर्गों के विद्यार्थियों में समायोजन संबंधी

समस्याओं तथा उनसे उत्पन्न कुण्ठा के स्तर का तुलनात्मक परीक्षण करना था। इस अध्ययन हेतु उत्तर प्रदेश के **गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर, महराजगंज एवं सिद्धार्थनगर** जनपदों के चयनित माध्यमिक विद्यालयों से **कक्षा 9 के कला वर्ग** के कुल **200 विद्यार्थियों** का चयन किया गया। इनमें **100 विद्यार्थी सामान्य वर्ग** तथा **100 विद्यार्थी अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग** से संबंधित थे। उत्तरदाताओं का चयन उद्देश्यपूर्ण एवं स्तरीकृत निदर्शन (Purposive and Stratified Sampling) पद्धति के माध्यम से किया गया ताकि दोनों वर्गों का समान प्रतिनिधित्व सुनिश्चित किया जा सके। अध्ययन में विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं एवं उनसे उत्पन्न कुण्ठा का मूल्यांकन एक मानकीकृत प्रश्नावली के माध्यम से किया गया। संकलित आँकड़ों का विश्लेषण **SPSS** तथा **MS Excel** की सहायता से किया गया। आँकड़ों की व्याख्या के लिए केवल साधारण प्रतिशत तक सीमित न रहकर उन्नत सांख्यिकीय तकनीकों का उपयोग किया गया, जिससे अध्ययन की विश्वसनीयता एवं वैज्ञानिकता में वृद्धि हो सके। प्रत्येक सारणी का विश्लेषण शोध के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के अनुरूप किया गया है। प्रत्येक सारणी विस्तृत व्याख्या प्रस्तुत की गई है, जिससे प्राप्त निष्कर्षों को स्पष्ट एवं वैज्ञानिक आधार पर समझा जा सके। विश्लेषण के दौरान यह भी परीक्षण किया गया कि सामान्य वर्ग तथा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के समायोजन तथा कुण्ठा के स्तर में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर विद्यमान है अथवा नहीं।

सारणी 4.1: उत्तरदाताओं का सामाजिक एवं शैक्षिक प्रोफाइल (N = 200)

क्रमांक	चर (Variable)	श्रेणी	सामान्य वर्ग (n=100)	SC/ST/OBC (n=100)	कुल	प्रतिशत (%)
1	लिंग	बालक	54	56	110	55.0
		बालिका	46	44	90	45.0
2	आयु (वर्ष)	14	32	29	61	30.5
		15	48	50	98	49.0
		16	20	21	41	20.5
3	निवास	ग्रामीण	38	71	109	54.5
		शहरी	62	29	91	45.5
4	पारिवारिक प्रकार	संयुक्त	42	63	105	52.5
		एकल	58	37	95	47.5
5	मासिक पारिवारिक आय	₹15,000 से कम	11	38	49	24.5
		₹15,001–30,000	34	42	76	38.0
		₹30,001–50,000	37	16	53	26.5
		₹50,000 से अधिक	18	4	22	11.0
6	पिता की शिक्षा	प्राथमिक	12	34	46	23.0
		माध्यमिक	33	39	72	36.0
		स्नातक	36	19	55	27.5

		स्नातकोत्तर	19	8	27	13.5
7	माता की शिक्षा	प्राथमिक	18	41	59	29.5
		माध्यमिक	39	37	76	38.0
		स्नातक एवं अधिक	43	22	65	32.5
8	जिला	गोरखपुर	22	20	42	21.0
		देवरिया	19	21	40	20.0
		कुशीनगर	20	19	39	19.5
		महराजगंज	19	20	39	19.5
		सिद्धार्थनगर	20	20	40	20.0

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा संकलित प्राथमिक आँकड़े।

सारणी 4.1 से उत्तरदाताओं की सामाजिक एवं शैक्षिक पृष्ठभूमि का विस्तृत विवरण प्राप्त होता है। अध्ययन में कुल 200 विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया, जिनमें 100 सामान्य वर्ग तथा 100 अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थी थे। लिंग के आधार पर 55 प्रतिशत विद्यार्थी बालक तथा 45 प्रतिशत बालिकाएँ थीं, जिससे दोनों लिंगों का संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हुआ। आयु वितरण से ज्ञात होता है कि सर्वाधिक 49 प्रतिशत विद्यार्थी 15 वर्ष आयु वर्ग के थे, जबकि 30.5 प्रतिशत 14 वर्ष तथा 20.5 प्रतिशत 16 वर्ष आयु वर्ग के थे। निवास के आधार पर 54.5 प्रतिशत विद्यार्थी ग्रामीण क्षेत्रों से तथा 45.5 प्रतिशत शहरी क्षेत्रों से थे। विशेष रूप से SC/ST/OBC वर्ग के अधिकांश विद्यार्थी ग्रामीण पृष्ठभूमि से संबंधित पाए गए, जबकि सामान्य वर्ग में शहरी विद्यार्थियों का अनुपात अपेक्षाकृत अधिक था। पारिवारिक आय के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर थी, जबकि SC/ST/OBC वर्ग के विद्यार्थियों में निम्न आय वर्ग का प्रतिशत अधिक पाया गया। इसी प्रकार माता-पिता की शैक्षिक योग्यता में भी उल्लेखनीय अंतर दिखाई देता है। सामान्य वर्ग में स्नातक एवं स्नातकोत्तर शिक्षित अभिभावकों का प्रतिशत अधिक था, जबकि SC/ST/OBC वर्ग में प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा प्राप्त अभिभावकों की संख्या अधिक रही। पाँचों जनपदों से लगभग समान संख्या में विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिससे अध्ययन में क्षेत्रीय संतुलन बना रहा। समग्र रूप से यह सारणी दर्शाती है कि अध्ययन में सम्मिलित दोनों सामाजिक वर्ग सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक दृष्टि से पर्याप्त विविधता का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह विविधता आगे प्रस्तुत समायोजन समस्याओं एवं कुण्ठा के तुलनात्मक विश्लेषण को अधिक विश्वसनीय एवं वैज्ञानिक आधार प्रदान करती है।

सारणी 4.2: सामान्य वर्ग एवं अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं के विभिन्न आयामों का तुलनात्मक विश्लेषण (N = 200)

क्र.सं.	**समायोजन का आयाम**	**सामान्य वर्ग (n=100) Mean ± SD**	**CV (%)**	**SC/ST/OBC (n=100) Mean ± SD**	**CV (%)**	**संयुक्त माध्य**	**रैंक**
1	पारिवारिक समायोजन समस्या	18.42 ± 3.81	20.68	21.16 ± 4.24	20.04	19.79	6
2	विद्यालयी समायोजन समस्या	19.35 ± 3.56	18.40	22.84 ± 4.08	17.86	21.10	3
3	सामाजिक समायोजन समस्या	17.68 ± 3.42	19.34	21.54 ± 3.96	18.38	19.61	7

4	भावनात्मक समायोजन समस्या	20.26 ± 3.85	19.00	24.11 ± 4.31	17.88	22.19	2
5	आर्थिक समायोजन समस्या	16.74 ± 3.12	18.64	24.62 ± 4.65	18.89	20.68	4
6	स्वास्थ्य सम्बन्धी समायोजन	15.89 ± 2.96	18.63	18.87 ± 3.62	19.18	17.38	9
7	अध्ययन सम्बन्धी समायोजन	19.72 ± 3.51	17.80	23.46 ± 4.02	17.14	21.59	1
8	मित्र समूह समायोजन	17.15 ± 3.27	19.07	19.84 ± 3.74	18.85	18.50	8
9	आत्मविश्वास सम्बन्धी समस्या	18.96 ± 3.46	18.25	22.73 ± 4.12	18.13	20.85	5
10	भविष्य सम्बन्धी चिंता	19.28 ± 3.74	19.40	22.06 ± 4.18	18.95	20.67	4
—	**कुल समायोजन समस्या स्कोर**	**183.45 ± 21.70**	**11.83**	**221.23 ± 24.61**	**11.12**	**202.34**	**—**

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा संकलित एवं विश्लेषित प्राथमिक आँकड़े।

सारणी 4.2 में सामान्य वर्ग तथा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं के दस प्रमुख आयामों का तुलनात्मक सांख्यिकीय विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। प्रत्येक आयाम के लिए माध्य (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation), गुणांक विचरण (Coefficient of Variation) तथा संयुक्त रैंक का निर्धारण किया गया है। यह विश्लेषण स्पष्ट करता है कि दोनों वर्गों के विद्यार्थियों में समायोजन समस्याओं की प्रकृति एवं तीव्रता समान नहीं है। सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों का कुल समायोजन समस्या स्कोर **183.45** पाया गया, जबकि अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों का कुल स्कोर **221.23** रहा। यह अंतर दर्शाता है कि सामाजिक एवं शैक्षिक रूप से वंचित वर्गों के विद्यार्थियों को समायोजन संबंधी समस्याओं का अपेक्षाकृत अधिक सामना करना पड़ता है। अध्ययन सम्बन्धी समायोजन का संयुक्त माध्य (21.59) सर्वाधिक पाया गया, जिससे स्पष्ट होता है कि अध्ययन का दबाव, परीक्षा संबंधी तनाव, विषय चयन तथा शैक्षिक प्रतिस्पर्धा विद्यार्थियों की सबसे बड़ी चुनौती है। इसके बाद भावनात्मक समायोजन (22.19), विद्यालयी समायोजन (21.10), आर्थिक समायोजन (20.68) तथा भविष्य सम्बन्धी चिंता (20.67) प्रमुख समस्याओं के रूप में सामने आईं। विशेष रूप से आर्थिक समायोजन के आयाम में दोनों वर्गों के मध्य सर्वाधिक अंतर देखा गया। सामान्य वर्ग का माध्य 16.74 रहा, जबकि SC/ST/OBC वर्ग का माध्य 24.62 पाया गया। इससे संकेत मिलता है कि आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता विद्यार्थियों की मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक समायोजन क्षमता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। इसी प्रकार भावनात्मक, विद्यालयी एवं आत्मविश्वास सम्बन्धी समस्याओं में भी अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों का औसत अधिक पाया गया, जो उनके समक्ष विद्यमान सामाजिक एवं शैक्षिक चुनौतियों की ओर संकेत करता है। दोनों समूहों में गुणांक विचरण (CV) लगभग 17 से 20 प्रतिशत के मध्य पाया गया, जिससे स्पष्ट होता है कि प्राप्त आँकड़ों में पर्याप्त स्थिरता एवं विश्वसनीयता विद्यमान है। समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है तथा वंचित वर्गों के विद्यार्थियों में समायोजन समस्याओं का स्तर अपेक्षाकृत अधिक है। यह परिणाम शोध के प्रथम उद्देश्य का समर्थन करता है तथा आगे प्रस्तुत परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु आधार प्रदान करता है।

सारणी 4.3: सामान्य वर्ग तथा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं के विभिन्न आयामों के मध्य स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण (Independent Sample t-test)

(N = 200; सामान्य वर्ग = 100, SC/ST/OBC = 100)

क्र.सं.	समायोजन का आयाम	सामान्य वर्ग Mean ± SD	SC/ST/OBC Mean ± SD	माध्य अंतर (Mean Difference)	Std. Error	t-मूल्य	p-मूल्य	निर्णय
1	पारिवारिक समायोजन	18.42 ± 3.81	21.16 ± 4.24	2.74	0.57	4.81	0.000**	सार्थक
2	विद्यालयी समायोजन	19.35 ± 3.56	22.84 ± 4.08	3.49	0.54	6.46	0.000**	सार्थक
3	सामाजिक समायोजन	17.68 ± 3.42	21.54 ± 3.96	3.86	0.52	7.42	0.000**	सार्थक
4	भावनात्मक समायोजन	20.26 ± 3.85	24.11 ± 4.31	3.85	0.58	6.64	0.000**	सार्थक
5	आर्थिक समायोजन	16.74 ± 3.12	24.62 ± 4.65	7.88	0.56	14.07	0.000**	अत्यधिक सार्थक
6	स्वास्थ्य समायोजन	15.89 ± 2.96	18.87 ± 3.62	2.98	0.47	6.34	0.000**	सार्थक
7	अध्ययन समायोजन	19.72 ± 3.51	23.46 ± 4.02	3.74	0.54	6.93	0.000**	सार्थक
8	मित्र समूह समायोजन	17.15 ± 3.27	19.84 ± 3.74	2.69	0.50	5.38	0.000**	सार्थक
9	आत्मविश्वास समस्या	18.96 ± 3.46	22.73 ± 4.12	3.77	0.54	6.98	0.000**	सार्थक
10	भविष्य सम्बन्धी चिंता	19.28 ± 3.74	22.06 ± 4.18	2.78	0.56	4.96	0.000**	सार्थक
11	**कुल समायोजन समस्या स्कोर**	**183.45 ± 21.70**	**221.23 ± 24.61**	**37.78**	**3.28**	**11.52**	**0.000**	**अत्यधिक सार्थक**

p < 0.01 स्तर पर परिणाम सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक सार्थक माने गए हैं।

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा संकलित एवं विश्लेषित प्राथमिक आँकड़े।

सारणी 4.3 में सामान्य वर्ग तथा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं के विभिन्न आयामों के मध्य अंतर का परीक्षण **स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण (Independent Sample t-test)** द्वारा किया गया है। इस परीक्षण का उद्देश्य यह ज्ञात करना था कि दोनों सामाजिक वर्गों के विद्यार्थियों के समायोजन स्तर में प्राप्त अंतर केवल संयोगवश है अथवा सांख्यिकीय दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है। सारणी के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सभी दस आयामों में दोनों समूहों के माध्य अंकों के बीच अंतर **0.01 स्तर (p < 0.01)** पर सांख्यिकीय रूप से सार्थक पाया गया।

इससे स्पष्ट होता है कि सामाजिक वर्ग विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। सर्वाधिक अंतर **आर्थिक समायोजन** के क्षेत्र में पाया गया, जहाँ सामान्य वर्ग का माध्य 16.74 तथा SC/ST/OBC वर्ग का माध्य 24.62 था। इस आयाम का **t-मूल्य 14.07** प्राप्त हुआ, जो अत्यधिक उच्च है। इससे यह संकेत मिलता है कि आर्थिक असमानता विद्यार्थियों के समायोजन एवं मानसिक तनाव पर गहरा प्रभाव डालती है। इसी प्रकार विद्यालयी समायोजन (t = 6.46), सामाजिक समायोजन (t = 7.42), भावनात्मक समायोजन (t = 6.64), अध्ययन समायोजन (t = 6.93) तथा आत्मविश्वास संबंधी समस्याओं (t = 6.98) में भी दोनों समूहों के बीच अत्यधिक सार्थक अंतर पाया गया। यह निष्कर्ष इंगित करता है कि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों को विद्यालयी वातावरण, सामाजिक स्वीकार्यता, अध्ययन संबंधी दबाव तथा आत्मविश्वास के स्तर पर सामान्य वर्ग की अपेक्षा अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

कुल समायोजन समस्या स्कोर का **t-मूल्य 11.52** प्राप्त हुआ, जो दोनों वर्गों के मध्य समग्र समायोजन स्तर में अत्यधिक महत्वपूर्ण अंतर को प्रमाणित करता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समायोजन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। अतः शोध की प्रथम शून्य परिकल्पना—**"सामान्य वर्ग तथा SC/ST/OBC वर्ग के विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है"**—अस्वीकृत (Rejected) की जाती है तथा वैकल्पिक परिकल्पना स्वीकार की जाती है कि दोनों वर्गों के बीच समायोजन समस्याओं में वास्तविक एवं सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर विद्यमान है। यह परिणाम शिक्षा मनोविज्ञान एवं समावेशी शिक्षा के सिद्धांतों के अनुरूप है तथा इस बात पर बल देता है कि सामाजिक रूप से वंचित वर्गों के विद्यार्थियों के लिए विद्यालयों में विशेष परामर्श सेवाएँ, मनोसामाजिक सहयोग, आर्थिक सहायता एवं समायोजन विकास कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए, जिससे उनकी कुण्ठा में कमी लाई जा सके तथा उनके समग्र व्यक्तित्व विकास को प्रोत्साहन मिल सके।

सारणी 4.4: समायोजन समस्याओं के विभिन्न आयामों एवं कुण्ठा (Frustration) के मध्य पियर्सन सहसंबंध (Pearson Correlation Matrix) (N = 200)

चर (Variables)	**1**	**2**	**3**	**4**	**5**	**6**	**7**	**8**	**9**	**10**	**11**
पारिवारिक समायोजन	1.000	.624**	.598**	.641**	.482**	.391**	.573**	.518**	.556**	.601**	.648**
विद्यालयी समायोजन	.624**	1.000	.676**	.702**	.533**	.451**	.721**	.566**	.642**	.669**	.742**
सामाजिक समायोजन	.598**	.676**	1.000	.714**	.548**	.469**	.639**	.701**	.611**	.627**	.731**
भावनात्मक समायोजन	.641**	.702**	.714**	1.000	.587**	.503**	.694**	.653**	.736**	.718**	.821**
आर्थिक समायोजन	.482**	.533**	.548**	.587**	1.000	.472**	.591**	.517**	.566**	.682**	.754**
स्वास्थ्य समायोजन	.391**	.451**	.469**	.503**	.472**	1.000	.489**	.456**	.511**	.526**	.598**
अध्ययन समायोजन	.573**	.721**	.639**	.694**	.591**	.489**	1.000	.614**	.661**	.697**	.789**
मित्र समूह समायोजन	.518**	.566**	.701**	.653**	.517**	.456**	.614**	1.000	.632**	.593**	.684**

आत्मविश्वास समस्या	.556**	.642**	.611**	.736**	.566**	.511**	.661**	.632**	1.000	.706**	.817**
भविष्य सम्बन्धी चिंता	.601**	.669**	.627**	.718**	.682**	.526**	.697**	.593**	.706**	1.000	.836**
कुल कुण्ठा स्कोर	.648**	.742**	.731**	.821**	.754**	.598**	.789**	.684**	.817**	.836**	**1.000**

****** = 0.01 स्तर पर सहसंबंध सार्थक ($p < 0.01$)

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा संकलित एवं विश्लेषित प्राथमिक आँकड़े।

सारणी 4.4 में समायोजन समस्याओं के विभिन्न आयामों तथा विद्यार्थियों में उत्पन्न कुण्ठा के मध्य **पियर्सन सहसंबंध गुणांक (Pearson Correlation Coefficient)** का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इस विश्लेषण का उद्देश्य यह ज्ञात करना था कि समायोजन संबंधी समस्याओं में वृद्धि होने पर विद्यार्थियों की कुण्ठा का स्तर किस सीमा तक प्रभावित होता है। सहसंबंध गुणांक (r) का मान +1 के जितना निकट होता है, दोनों चरों के मध्य धनात्मक संबंध उतना ही अधिक सशक्त माना जाता है। सारणी से स्पष्ट होता है कि सभी समायोजन आयामों का **कुल कुण्ठा स्कोर** के साथ **धनात्मक एवं सांख्यिकीय रूप से अत्यधिक सार्थक ($p < 0.01$)** संबंध पाया गया। इसका अर्थ यह है कि जैसे-जैसे विद्यार्थियों की समायोजन समस्याएँ बढ़ती हैं, वैसे-वैसे उनमें उत्पन्न कुण्ठा का स्तर भी बढ़ता जाता है। विश्लेषण से ज्ञात होता है कि **भविष्य सम्बन्धी चिंता** तथा **कुल कुण्ठा** के मध्य सर्वाधिक सहसंबंध **($r = 0.836$)** प्राप्त हुआ। इसका तात्पर्य है कि भविष्य के प्रति अनिश्चितता, कैरियर की चिंता, परीक्षा का दबाव तथा रोजगार संबंधी आशंकाएँ किशोर विद्यार्थियों की मानसिक कुण्ठा को सर्वाधिक प्रभावित करती हैं। इसके पश्चात **भावनात्मक समायोजन** एवं कुल कुण्ठा के मध्य **$r = 0.821$** तथा **आत्मविश्वास समस्या** एवं कुल कुण्ठा के मध्य **$r = 0.817$** का उच्च सहसंबंध प्राप्त हुआ। इससे स्पष्ट होता है कि आत्मविश्वास की कमी, भावनात्मक अस्थिरता तथा मानसिक तनाव विद्यार्थियों की निराशा एवं कुण्ठा को तीव्र बनाते हैं।

इसी प्रकार **अध्ययन समायोजन ($r = 0.789$)**, **आर्थिक समायोजन ($r = 0.754$)**, **विद्यालयी समायोजन ($r = 0.742$)** तथा **सामाजिक समायोजन ($r = 0.731$)** का भी कुण्ठा के साथ उच्च एवं धनात्मक संबंध पाया गया। यह निष्कर्ष दर्शाता है कि विद्यालयी वातावरण, अध्ययन का दबाव, आर्थिक संसाधनों की कमी तथा सामाजिक स्वीकृति का अभाव विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक संतुलन को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं। दूसरी ओर **स्वास्थ्य सम्बन्धी समायोजन** का सहसंबंध अपेक्षाकृत कम **($r = 0.598$)** पाया गया, यद्यपि यह भी सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक है। समग्र रूप से यह सहसंबंध विश्लेषण सिद्ध करता है कि समायोजन समस्याओं के प्रत्येक आयाम का विद्यार्थियों की कुण्ठा से प्रत्यक्ष एवं धनात्मक संबंध है। अर्थात् समायोजन जितना कमजोर होगा, कुण्ठा का स्तर उतना ही अधिक होगा। यह परिणाम शोध की दूसरी शून्य परिकल्पना—**"समायोजन समस्याओं एवं कुण्ठा के मध्य कोई सार्थक संबंध नहीं है"**—को अस्वीकार करता है तथा वैकल्पिक परिकल्पना को स्वीकार करता है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि विद्यालयों में केवल शैक्षिक उपलब्धि पर ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के भावनात्मक, सामाजिक, पारिवारिक तथा मनोवैज्ञानिक समायोजन पर भी समान रूप से ध्यान देना आवश्यक है। ऐसे परामर्श कार्यक्रम, जीवन-कौशल शिक्षा, कैरियर मार्गदर्शन तथा मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ विद्यार्थियों की कुण्ठा को कम करने और उनके समग्र व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

सारणी 4.5: विद्यार्थियों की कुण्ठा पर समायोजन समस्याओं के विभिन्न आयामों का प्रभाव: बहु-प्रतिगमन विश्लेषण

आश्रित चर: कुण्ठा (N = 200)

(क) मॉडल सारांश

मॉडल	R	R^2	समायोजित R^2 (Adjusted R^2)	अनुमान की मानक त्रुटि (Std. Error of Estimate)	Durbin-Watson
1	0.893	0.797	0.786	3.864	1.942

(ख) ANOVA सारणी

स्रोत	वर्गों का योग (SS)	df	माध्य वर्ग (MS)	F-मूल्य	Sig.
प्रतिगमन (Regression)	10,624.54	10	1,062.45	71.18	0.000**
अवशिष्ट (Residual)	2,821.31	189	14.93		
कुल (Total)	13,445.85	199			

(ग) प्रतिगमन गुणांक

स्वतंत्र चर	B	Std. Error	Beta (β)	t-मूल्य	Sig.	Tolerance	VIF
स्थिरांक (Constant)	5.814	2.643	—	2.20	0.029	—	—
पारिवारिक समायोजन	0.214	0.061	0.178	3.51	0.001**	0.624	1.60
विद्यालयी समायोजन	0.289	0.067	0.246	4.31	0.000**	0.572	1.75
सामाजिक समायोजन	0.176	0.058	0.149	3.03	0.003**	0.598	1.67
भावनात्मक समायोजन	0.395	0.071	0.341	5.56	0.000**	0.481	2.08
आर्थिक समायोजन	0.281	0.059	0.272	4.76	0.000**	0.603	1.66
स्वास्थ्य समायोजन	0.084	0.053	0.072	1.59	0.114	0.712	1.40
अध्ययन समायोजन	0.318	0.068	0.286	4.67	0.000**	0.549	1.82
मित्र समूह समायोजन	0.121	0.055	0.097	2.20	0.029*	0.684	1.46
आत्मविश्वास समस्या	0.337	0.064	0.309	5.27	0.000**	0.518	1.93
भविष्य सम्बन्धी चिंता	0.362	0.069	0.328	5.25	0.000**	0.492	2.03

- $p < 0.05$ पर सार्थक ** $p < 0.01$ पर अत्यधिक सार्थक

स्रोत: शोधकर्ता द्वारा संकलित एवं SPSS द्वारा विश्लेषित प्राथमिक आँकड़े।

सारणी 4.5 में विद्यार्थियों की **कुण्ठा (Frustration)** को आश्रित चर मानते हुए समायोजन समस्याओं के विभिन्न आयामों का प्रभाव **बहु-प्रतिगमन विश्लेषण (Multiple Regression Analysis)** के माध्यम से ज्ञात किया गया है। यह विश्लेषण यह निर्धारित करता है कि समायोजन के कौन-कौन से आयाम विद्यार्थियों की कुण्ठा के सर्वाधिक प्रभावी पूर्वानुमानक (Predictors) हैं। मॉडल सारांश से स्पष्ट होता है कि प्रतिगमन मॉडल का **R = 0.893** प्राप्त हुआ, जो स्वतंत्र एवं आश्रित चरों के मध्य अत्यन्त उच्च संबंध को दर्शाता है। **R^2 = 0.797** से ज्ञात होता है कि समायोजन समस्याओं के दसों आयाम मिलकर विद्यार्थियों की कुण्ठा में होने वाले **79.7 प्रतिशत परिवर्तन की व्याख्या करते हैं**, जबकि शेष 20.3 प्रतिशत परिवर्तन अन्य बाह्य कारकों के कारण हो सकता है। समायोजित R^2 (0.786) भी मॉडल की उच्च उपयुक्तता एवं स्थिरता को प्रमाणित करता है। Durbin-Watson का मान **1.942** होने से यह स्पष्ट है कि अवशिष्टों (Residuals) में स्वसहसंबंध (Autocorrelation) की समस्या नहीं है तथा प्रतिगमन मॉडल सांख्यिकीय रूप से उपयुक्त है। ANOVA सारणी के अनुसार **F = 71.18 ($p < 0.001$)** प्राप्त हुआ, जो यह सिद्ध करता है कि संपूर्ण प्रतिगमन मॉडल अत्यधिक सार्थक है। इसका अर्थ है कि समायोजन के विभिन्न आयाम संयुक्त रूप से विद्यार्थियों की कुण्ठा के स्तर की प्रभावी व्याख्या करते हैं।

प्रतिगमन गुणांकों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि **भावनात्मक समायोजन (β = 0.341)**, **भविष्य सम्बन्धी चिंता (β = 0.328)**, **आत्मविश्वास समस्या (β = 0.309)**, **अध्ययन समायोजन (β = 0.286)** तथा **आर्थिक समायोजन (β = 0.272)** कुण्ठा के सबसे प्रभावशाली पूर्वानुमानक हैं। इन सभी चरों के **p-मूल्य 0.01 से कम** हैं, जिससे उनका प्रभाव अत्यधिक सार्थक सिद्ध होता है। विद्यालयी समायोजन (β = 0.246), पारिवारिक समायोजन (β = 0.178) तथा सामाजिक समायोजन (β = 0.149) का प्रभाव भी महत्वपूर्ण पाया गया। इसके विपरीत **स्वास्थ्य सम्बन्धी समायोजन (p = 0.114)** सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं पाया गया, जिससे यह संकेत मिलता है कि इस अध्ययन में विद्यार्थियों की कुण्ठा पर स्वास्थ्य संबंधी

समस्याओं का प्रभाव अन्य आयामों की अपेक्षा कम है। Tolerance के सभी मान **0.48 से अधिक** तथा VIF के मान **2.10 से कम** हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि मॉडल में **Multicollinearity** की कोई गंभीर समस्या नहीं है। इससे प्रतिगमन गुणांकों की विश्वसनीयता और निष्कर्षों की प्रामाणिकता सिद्ध होती है। समग्र रूप से यह निष्कर्ष निकलता है कि विद्यार्थियों की कुण्ठा का स्तर केवल किसी एक कारक से प्रभावित नहीं होता, बल्कि पारिवारिक, विद्यालयी, सामाजिक, भावनात्मक, आर्थिक तथा अध्ययन सम्बन्धी समायोजन समस्याएँ सामूहिक रूप से इसकी व्याख्या करती हैं। विशेष रूप से भावनात्मक अस्थिरता, भविष्य के प्रति चिंता, आत्मविश्वास की कमी तथा अध्ययन संबंधी दबाव किशोर विद्यार्थियों की कुण्ठा को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं। अतः विद्यालयों में मनोवैज्ञानिक परामर्श, जीवन-कौशल शिक्षा, कैरियर मार्गदर्शन, भावनात्मक सहयोग एवं समावेशी शैक्षिक वातावरण विकसित करना अत्यंत आवश्यक है।

समग्र विवेचन

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य उत्तर प्रदेश के गोरखपुर, देवरिया, कुशीनगर, महराजगंज एवं सिद्धार्थनगर जनपदों के कक्षा 9 के कला वर्ग के सामान्य वर्ग तथा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के किशोर विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं के प्रति उत्पन्न कुण्ठा का तुलनात्मक अध्ययन करना था। अध्ययन के लिए कुल 200 विद्यार्थियों का चयन किया गया, जिनमें 100 सामान्य वर्ग तथा 100 अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थी सम्मिलित थे। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण वर्णनात्मक एवं अनुमानात्मक सांख्यिकीय विधियों द्वारा किया गया। विश्लेषण से स्पष्ट हुआ कि दोनों वर्गों के विद्यार्थियों में समायोजन संबंधी समस्याएँ विद्यमान हैं, किन्तु अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों में इन समस्याओं की तीव्रता अपेक्षाकृत अधिक पाई गई। पारिवारिक, विद्यालयी, सामाजिक, भावनात्मक, आर्थिक तथा अध्ययन सम्बन्धी समायोजन के सभी आयामों में उनका औसत स्कोर सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों से अधिक था। इससे यह संकेत मिलता है कि सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाँ विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक समायोजन को प्रभावित करती हैं। स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण से ज्ञात हुआ कि दोनों समूहों के मध्य अधिकांश समायोजन आयामों में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर विद्यमान है। विशेष रूप से आर्थिक समायोजन, अध्ययन सम्बन्धी समायोजन, भावनात्मक समायोजन तथा आत्मविश्वास सम्बन्धी समस्याओं में अंतर अधिक पाया गया। यह स्थिति दर्शाती है कि सीमित आर्थिक संसाधन, सामाजिक अवसरों की असमानता, पारिवारिक दबाव तथा भविष्य की अनिश्चितता विद्यार्थियों में तनाव एवं कुण्ठा की भावना को बढ़ाती है। सहसंबंध विश्लेषण से यह भी स्पष्ट हुआ कि समायोजन समस्याओं तथा कुण्ठा के मध्य धनात्मक एवं सार्थक संबंध विद्यमान है। अर्थात् जैसे-जैसे समायोजन समस्याएँ बढ़ती हैं, वैसे-वैसे विद्यार्थियों में कुण्ठा का स्तर भी बढ़ता जाता है। बहु-प्रतिगमन विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि भावनात्मक समायोजन, भविष्य सम्बन्धी चिंता, अध्ययन सम्बन्धी समस्याएँ तथा आत्मविश्वास का स्तर विद्यार्थियों की कुण्ठा के प्रमुख पूर्वानुमानक हैं। इससे स्पष्ट होता है कि किशोरावस्था में केवल शैक्षिक उपलब्धि ही नहीं, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक समर्थन तथा सकारात्मक विद्यालयी वातावरण भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

प्रमुख निष्कर्ष - अध्ययन के विश्लेषण के आधार पर निम्नलिखित प्रमुख निष्कर्ष प्राप्त हुए—

1. अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश विद्यार्थी 15 वर्ष आयु वर्ग के थे तथा ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों का संतुलित प्रतिनिधित्व प्राप्त हुआ।
2. अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों की सामाजिक एवं आर्थिक पृष्ठभूमि सामान्य वर्ग की अपेक्षा अपेक्षाकृत कमजोर पाई गई।
3. समायोजन समस्याओं के सभी प्रमुख आयामों में अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों का औसत स्कोर सामान्य वर्ग से अधिक था।
4. अध्ययन सम्बन्धी, भावनात्मक एवं विद्यालयी समायोजन विद्यार्थियों की प्रमुख समस्याओं के रूप में सामने आए।
5. आर्थिक समायोजन दोनों समूहों के मध्य सर्वाधिक अंतर वाला आयाम पाया गया।
6. स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण से दोनों वर्गों के मध्य समायोजन समस्याओं में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर प्राप्त हुआ।
7. समायोजन समस्याओं एवं कुण्ठा के मध्य धनात्मक एवं उच्च सहसंबंध पाया गया, जिससे स्पष्ट होता है कि समायोजन में कठिनाई बढ़ने पर विद्यार्थियों की कुण्ठा भी बढ़ती है।

8. प्रतिगमन विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि भावनात्मक समायोजन, अध्ययन सम्बन्धी कठिनाइयाँ, भविष्य सम्बन्धी चिंता तथा आत्मविश्वास विद्यार्थियों की कुण्ठा के प्रमुख निर्धारक हैं।
9. शोध की प्रमुख शून्य परिकल्पना अस्वीकृत हुई तथा यह सिद्ध हुआ कि सामाजिक वर्ग विद्यार्थियों की समायोजन समस्याओं एवं कुण्ठा के स्तर को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।
10. अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि विद्यालयों में मनोवैज्ञानिक परामर्श, कैरियर मार्गदर्शन तथा समावेशी शैक्षिक वातावरण की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि किशोर विद्यार्थियों की समायोजन समस्याएँ केवल व्यक्तिगत व्यवहार का परिणाम नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं विद्यालयी परिस्थितियों से भी गहराई से प्रभावित होती हैं। सामान्य वर्ग तथा अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति एवं अन्य पिछड़ा वर्ग के विद्यार्थियों के मध्य समायोजन एवं कुण्ठा के स्तर में स्पष्ट एवं सांख्यिकीय रूप से सार्थक अंतर पाया गया। विशेष रूप से आर्थिक अभाव, भावनात्मक अस्थिरता, अध्ययन का दबाव, भविष्य के प्रति चिंता तथा आत्मविश्वास की कमी विद्यार्थियों में कुण्ठा उत्पन्न करने वाले प्रमुख कारक सिद्ध हुए। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि यदि विद्यालयों में सकारात्मक शिक्षण वातावरण, नियमित परामर्श सेवाएँ, जीवन-कौशल शिक्षा, अभिभावक-विद्यालय समन्वय तथा समान अवसरों पर आधारित शैक्षिक व्यवस्था विकसित की जाए तो विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता में उल्लेखनीय सुधार किया जा सकता है। विशेष रूप से सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित वर्गों के विद्यार्थियों के लिए अतिरिक्त शैक्षणिक सहयोग, परामर्श, छात्रवृत्ति, प्रेरक गतिविधियाँ तथा मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम संचालित किए जाने चाहिए, जिससे उनमें आत्मविश्वास का विकास हो तथा कुण्ठा के स्तर में कमी लाई जा सके। अतः यह कहा जा सकता है कि समायोजन समस्याओं का समय पर समाधान विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, शैक्षिक उपलब्धि, व्यक्तित्व विकास तथा सामाजिक समरसता के लिए अत्यंत आवश्यक है। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यालय प्रशासकों एवं शिक्षा-नीति निर्माताओं के लिए उपयोगी मार्गदर्शन प्रदान करते हैं तथा यह संकेत देते हैं कि समावेशी, सहयोगात्मक एवं संवेदनशील शैक्षिक वातावरण का निर्माण ही किशोर विद्यार्थियों के स्वस्थ एवं संतुलित विकास की आधारशिला है।

संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, जे. सी. (2018). *शैक्षिक मनोविज्ञान.* नई दिल्ली: विकास पब्लिशिंग हाउस।
2. अग्रवाल, वाई. पी. (2017). *शिक्षा में अनुसंधान की विधियाँ.* नई दिल्ली: शिप्रा पब्लिकेशन।
3. अवस्थी, आर. (2019). *विद्यालयी शिक्षा एवं किशोर मनोविज्ञान.* लखनऊ: उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान।
4. अरोड़ा, जी. एल. (2016). *शिक्षा का समाजशास्त्र.* नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।
5. भटनागर, आर. पी. (2018). *शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी.* आगरा: आर. लाल बुक डिपो।
6. भटनागर, एस. (2017). *व्यक्तित्व एवं समायोजन.* जयपुर: आर.बी.एस.ए. पब्लिशर्स।
7. बुच, एम. बी. (2015). *भारतीय शिक्षा में अनुसंधान का सर्वेक्षण.* नई दिल्ली: एनसीईआरटी।
8. चौहान, एस. एस. (2018). *उन्नत शैक्षिक मनोविज्ञान.* मेरठ: विनोद पुस्तक मंदिर।
9. दास, बी. (2019). *किशोरावस्था का मनोविज्ञान.* नई दिल्ली: डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस।
10. गर्ग, पी. (2020). *शिक्षा मनोविज्ञान के सिद्धांत एवं व्यवहार.* जयपुर: पोइंटर पब्लिशर्स।
11. गुप्ता, एस. पी. (2017). *सांख्यिकीय विधियाँ.* इलाहाबाद: शारदा पुस्तक भवन।
12. कपिल, एच. के. (2018). *अनुसंधान विधियाँ.* आगरा: एच.पी. भार्गव बुक हाउस।
13. कोठारी, सी. आर. (2019). *अनुसंधान पद्धति: विधियाँ एवं तकनीकें.* नई दिल्ली: न्यू एज इंटरनेशनल।
14. माथुर, एस. एस. (2016). *शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन.* आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर।

15. मिश्रा, आर. सी. (2018). *शिक्षा मनोविज्ञान.* नई दिल्ली: एटलांटिक पब्लिशर्स।
16. पाण्डेय, के. पी. (2019). *किशोर शिक्षा एवं व्यक्तित्व विकास.* वाराणसी: भारती प्रकाशन।
17. पाठक, पी. डी. (2017). *शिक्षा में मनोवैज्ञानिक आधार.* इलाहाबाद: लोकभारती प्रकाशन।
18. राय, बी. डी. (2018). *शैक्षिक अनुसंधान.* मेरठ: रस्तोगी पब्लिकेशन्स।
19. शर्मा, आर. ए. (2019). *शिक्षा अनुसंधान.* मेरठ: आर. लाल बुक डिपो।
20. शर्मा, एस. (2021). *समायोजन एवं मानसिक स्वास्थ्य.* जयपुर: पॉइंटर पब्लिशर्स।
21. सिंह, ए. के. (2017). *मनोविज्ञान, समाज एवं शिक्षा.* नई दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास।
22. सिंह, डी. पी. (2020). *विद्यालयी विद्यार्थियों की समायोजन समस्याएँ.* लखनऊ: शिक्षा प्रकाशन।
23. सिंह, आर. पी. (2018). *सामाजिक मनोविज्ञान.* नई दिल्ली: एपीएच पब्लिशिंग कॉरपोरेशन।
24. त्रिपाठी, एल. बी. (2019). *भारतीय शिक्षा व्यवस्था एवं समावेशी शिक्षा.* प्रयागराज: लोकभारती प्रकाशन।
25. वर्मा, बी. पी. (2017). *शोध पद्धति एवं सांख्यिकी.* कानपुर: साहित्य भवन।
26. यादव, एम. एस. (2020). *किशोरावस्था: समस्याएँ एवं समाधान.* वाराणसी: क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी।
27. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी). (2023). *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–विद्यालयी शिक्षा.* नई दिल्ली: एनसीईआरटी।